

श्रिगमपरब्रह्मेणमहा॥कणुमैनप्रयानकाक्षी॥संचरतानन्नमैउद्धो॥मणहोनेहस्ये कुमठी॥स्यापति
 बोलताजाल्गा॥महोनेआरमास्तीयामना॥इंद्रियेनाथागुणसंपन्ना॥मजसरिसेनयावेवीस्येन॥
 परिमविज्ञापणामास्ति॥२५दिर्घवेसनिपउलालक्ष्मणु॥मिसिध्वजाइनओषधीबानु॥नुमजसरि
 सेअसतासिनु॥अस्येनपावसी॥गुह्यणसिमास्तावहवेग॥हाप्रस्तुतश्रसोदेप्रसंग॥तुसेमिसमा
 गमेमार्गु॥मजत्रमिलानवेच॥मागित्रिसारसाम्भासी॥जेदेवणेयउत्सुर्दियासी॥नेथंते
 धिप्रवेशोनिगुंनसी॥पद्मिनिभ्रमनजैसा॥३॥सर्वथाइंद्रियावेनिद्वारे॥नुगुंनसिनिजगुणविकारे॥
 नेथेवेसनेबवाक्तारे॥पुढे ठाकुनियेनिल् लक्ष्मणेनिविद्वारसंगे॥इंद्रावेवपुसीपउलीज्ञगे॥
 वीरंचिसीवेसनघउलेउगे॥गीरजेवेविवाह॥ ॥ गसिउरीलाविकारु॥तेलिहीभुललस्यंकु
 र्वंद्वासिलागलाक्वं कथोनुगुतल्पकाचा॥ ॥ नसिष्टाविश्वामित्रारेसे॥मनाच्चासंकल्पासार
 से॥उर्वसियाकेलेपित्ते॥कितेककाक्ववरी॥४॥बेसारसियाअनुवादा॥करिनालागेदिर्घनिंता॥
 ह्नणोनिरमनासर्वदा॥संकल्पविकल्पकरिसी॥५॥मनानुसर्वसारवैधनाचेस्त्रवा॥मनानुमुक्तिवे
 द्वारकेवव्वा॥मनानुपरब्रह्मनिर्मवा॥मनानुपर्वत्त्रवद्या॥६॥मनानुसर्वदासमुण॥मनानुसुन्य
 वेनिर्गुण॥मनानुसर्वधिर्वरुणी॥मनानुपीपास्याकाँत्रु॥७॥मनानुविस्यावेजावय॥मनानुअमृता

१

वउवाग्नीतपउलास्फुलिगञ्जरु॥ किंजवगसितलवणपरिमानु॥ नानादुधार्नवामध्येअनुकृतु॥ सेचि
हुणिआला॥ ४६॥ ऐसहुमंतावेनेसमर्॥ मननिमालेश्विरामावापार्॥ सगनवनाकेलिहरर्॥ मनोवेगी
निसीद्रिची॥ ४७॥ सिद्रिअष्टमामुख्याभसनी॥ मध्यमादाहानोलिजेती॥ क्षुद्रापाचवासानिती॥ गंथानं
रिपेहो॥ ४८॥ सर्वसाधकासाधनिनेमे॥ मुरमअष्टमासाविनामे॥ कोलिलेअसेअनुअमेपतेपरियेसाजी॥ ४९॥
पहिजीयेसिद्रीचेनामनिमा॥ हुसरिचेजानामानि॥ नीसरेसिद्रीचेवसिमा॥ चतुर्थिचेप्राप्तिलेसो॥ ५०॥
प्रकाशनामपंचमिचे॥ इद्धिनास्पस्योजाणाताचैपतविनाहोस्तपमिचे॥ अष्टमीनेसर्वकाम्पका॥ ५१॥
रेसिअष्टमासिद्रीचीनामावछी॥ सासंवरताचैततकाव्यो॥ देसाक्षात्कासुर्याचामंडव्यो॥ निर्तन
असक्षि॥ ५२॥ क्षेवक्षकुइजवनाउमाज्ञमादा॥ तुवमन्नारथातेदेती॥ साहुमंतानेवस्पजसनी
हावेववन्नद्वजवतानुभा॥ मध्यमदाहासानि॥ नेहुमंतानेगविलीकुद्री॥ नेमनोवेगीनीचे
निसिराज्ञी॥ पावताजाला॥ ५३॥ सहजक्षितासहजव्यो॥ सिधमिद्रीनेसीप्रकाव्ये॥ वहुवसकर्मि
लिजेसिरविमंडव्ये॥ अपारनन्नमार्ग॥ अधारक्षसमुस्तानेलंघिले॥ याद्विगुणभुमंडवक्षमिले॥
एडेश्विर्नवासिदेविले॥ असंज्ञाव्यवैसे॥ लभज्ञनरेनराक्षिहुनितगव्या॥ योजपौरवद्वयापि
त्रिपिदशक्ति॥ रतुक्रेगणपेवेकोतुक्षेषुगोव्यिकोलिलेपे॥ ५४॥ याद्विराज्ञीचेदक्षणपारि॥ विश्वा

(८)

वजसेवं द्वागिरि॥ ज्ञोणावकुसीमासेजाइ॥ स्वर्गेपमुसालिगा॥ ३८५ हनुमंत्रयरलओषधिकारणि।
लणउनिप्रथमस्त्रियावणे॥ कावनेमिनारविलानेपो॥ अपुर्वमायानिमिली॥ ३८६ अजस्यनजपुर्वनो
चंद्राचकु॥ चंद्रोएसासुसितकु॥ सुंदरमनोहरधककु॥ द्वेवासगिरिएसा॥ ३८० साचंद्रावक्षासि
नवनेवर्णिले॥ कादेवद्वाचेनप्रगटले॥ किंप्रियागागाचेयवाउगवले॥ ३८१ वर्तनुपैहो॥ ३८१ एकिने
पृथ्वीवेक्षिवेक्षमव॥ किनेविगटदक्षाचर॥ कितपक्षानावल्लिक्कवेचेमंत्रव॥ माहारमणीये॥ ३८२
गोठलियासुधारसाचागोद्वु॥ किंब्रह्माउचेवेचाचाकु॥ नानाआश्चितजीवधर्मावाविग्रहु॥
पर्वतनुपैतो॥ ३८२ असोसाचंद्राचक्षाप्र
स्त्रियो॥ दक्षप्रजागुव्युनिवीउदसी॥ तेथेतोरा
स्त्रियो॥ तेजेसापुष्युत्तुषु॥ द्वितीयाविग्रह॥ ३८३ तेजेसेस्वतिवेजाक्षयेवापि
वेष्टिनवोद्वु॥ वेदग्नस्त्राचाकरिती॥ अजाश्रमतेभिर्मनिये॥ जेसेस्वतिवेजाक्षयेवापि
कृपिचेपुर्णीतीय॥ उरवमर्यादाउचेक्षवले॥ ३८४ द्विव्यवल्लीदिव्यदम्॥ वाठिनलेभेदितयोम्॥ फलितु
न्धित्वमीत्तम्॥ वोनिजालेभसती॥ ३८५ चहुक्तउक्तमीवने॥ निर्मिक्तवेलिंसमार्जने॥ अस्य
गतांकारणेउदक्तजेने॥ मिद्वक्तुनिर्विक्ता॥ ३८६ अपुर्वजाप्रमाचिरचना॥ होमत्राव्याप्तदग्ननाम
साहव्यवीत्रथरचणापविस्त्रियामनोहरा॥ व्यक्तामिपिपनीकाज्ञासमीधापहर्मुडियाद्वाविधापक

३

४८
३४

ऐसा क्राच ने मिनिश्चाच सुकृपट करने परि गहिरा प्रावश्य करना जैसा विष्रवे लित षष्ठी अमार्गिब्या येस्ति
गहिला ॥५॥ किंव गुच्छे सल्लागंगा तिनी ॥ ध्यान स्तुयो गिया वे परी ॥ तो अवस्था न मछाने उद्दी ॥ पाली
तुंचुषुष्टीधर्मनिया ॥५॥ ऐसा रास सधरु नियाक्षमा ॥ वज्र वित पापकर्मा ॥ वे सवाज सेनव आश्रमा ॥
समिप हणुमंतु जाला ॥५॥ जे सार घन पोनि धर्म प्रती ॥ जाता मार्गिला गेये मावती ॥ तैस का
व ने मिवाजाश्रमुमानुती ॥ पावलादोणाच वजाता ॥५॥ की परवस्तु वे ब्रह्मिता साधन ॥ आउवेगा
हेये रवादे विप्र ॥ नाना वेगाय्य मुवेडु मवत व त्रिती ॥५॥ पुडेग कौधर्म हणुमंतु मने वेगे जाता ॥
मुलिजाश्रमा सिजाला दे रवतो ॥ अपुर्वे सुर भारत व त्रिती ॥ उद्दल पाहो बागब्या ॥५॥ लग्ने साजा
श्रमुमनो हठु ॥ अति रमनिये संपत्ति सागत ॥ उन्हेय मढा मेतु ॥ उपुत्ति मासि वो वाक्षिले ॥५॥
वैसिरवना अपुर्व ॥ स्वर्गीप मप्रकार सवै ॥ करु अपुर्वि वे पुन्य वै नव ॥ वास्तव्य सुरवे हृरि ॥५॥ ते
साते थेविवारि जंतः कर्णि ॥ आलाहणुमंतु ॥ निमी प्यार्वत रस्तु त्रुशा कांनु ॥ नव मुनिवा नविका
वकस्था नु ॥ याहो याहो मार्गस्त हो ॥५॥ जे सिवारि किली मुलिची वानि ॥
हणुमंतु विवारि जंतः कर्णि ॥ ते रिधे वो पामहंनाची ॥५॥ मगहणुमरुउगराहीला ॥ जे साजनि लु
जागना सिबाला ॥ किंतो मुर्वि मंतु उत्तरला ॥ जंतकुजाका विहुनि ॥५॥ पुर्देशका विदेखो निः ॥५॥

५
वेजधारि बोले सुचनि ॥ महो वहु असला सिभासनि ॥ वेसग पुजा करु ॥ नवह पुमंतु लणे
जिद्धि जा ॥ वि परिन बोल ना द्वौ जरजा ॥ आनि चक्रा वी तुमची पुजा ॥ परि कार्यार्थि जसो ॥ अ
नाभानि सपावले सक्रब ॥ दे गाउद वह सुचित वा ॥ तुरो ने आपिले नुं व वा ॥ सदयात्रोष तज्ज्ञ
मावक सबोले मधुरा गिरा ॥ अणेभासनि वेसग कृपि श्वरा ॥ उभयावृत्तवतु रा ॥ वेसा प्राचन
हरि सिला ॥ अथातु इससी प्रभु मंडितु ॥ मार्ति गमला सिवहु तु ॥ आमुचे निभाग्य अतितु ॥ आलसि
ये स्थानासि ॥ अथात रिभाना तु दूपावरि ॥ स्थिर गाहिय थी का आरि ॥ स्वरुघाकुपी करि ॥ मिस्याने सी
त कोदके ॥ अथाहिवरि इछावे गवे ॥ या द्वय नाचियके खुठेवि रकाक्ष अथवासि प्रकाके
राहा केजा वे विरा ॥ अथातैसा कृपटी मावकर ॥ बोल वह साल सादतु ॥ जैसा गुत्ता मासि न स्फुरु ॥ अ
क्षम्भ सेवाहा वी ॥ अथपक्ति ते माहा विषना गकाऊ ॥ तुवरु छी रागे चामितातो डिए उदरात गोलि पा
त मुरकुं उ ॥ पाडिस्यण मात्रे ॥ ऐसे वेजधारि याच बोल ॥ हुमंता सितु चले वह साल ॥ पृष्ठ
कै सोन सुको हेउ गवेल ॥ आदिस्य न्यण उनि याउ ॥ उगवता स्व पुर्व आदित्य ॥ नैसा विल
क्षमनासि गुत्तमा क्लणउनि वेगराम ॥ उक्तिआदरे न बोसे ॥ उरा ॥ जैसे वारगणो वे विकास ॥
विवेकिया सिनलागे कामपि से ॥ नाना स्वरूप साधकासि द्वौ सरिसे ॥ गुवने न पउ ॥ उ ॥ अना

(18)

मिकागृहि चासो हवा॥ नाजकुणी हुनिजागवा॥ जो उच्च मिदेर वो निडो छ॥ क्राय प्रवेशो निपाहिजे॥
ऐसि यापरि हणु मंते॥ ज्ञाति लकृप द मुनि चेजा श्रमा ते॥ उभाज सत्ता चिमागुने॥ उद्दूमा नित्तले॥
हणु मंतु लण मुनि तु न्ना॥ रेखिले सर्व पावले जान्ना॥ आनाचय येपो नष्ट उजाश्रमा॥ येउणी ये रवा
रे काकी॥ ऐव्वेउनि तु मचे चित्त बोदक॥ लेपो पाहुने र पावति जने क्र॥ प्रिति चेबो लने तेबधिक॥
सान्न सुधार सहुनि॥ ७७॥ ते से वर्दे विरसु भट्ठा॥ लेपो काहुने मिने प्रानि लाविदु॥ सग विष्णा सिमा
येव्वार यदु॥ उद्दकाना वानरा सिपे॥ ७८॥ एउ मंतु लण पो महा पुत्रा॥ येपो घटोद द्रेन वजा येत्रुगा॥
अगस्ति वउवानकु॥ पी पाता॥ लेस्ति मजल नगल॥ गहे॥ व्वासग काळ ने मिति ष्णा सिमा गना॥
जाला लणो न्यारे हणु मंता॥ सरो वरहर रववा॥ ७९॥ उद्दकून मागे कोक्कासि॥ ८०॥ सग विव्वा धिह
एउ मंता सि॥ ज्ञातो वरहर रवविला जेथे विवा॥ ८१॥ येउ उद्दकू येनाचहुना सि॥ भस्ति लेजसे॥ ८२॥ एउ
हणु मंतु जाउनि ने काकी॥ वै सत्ता सरो वराचे पाकी॥ प्रात्तानकू रवया अंजुकी॥ उद्दकू येनाजला॥
ते सरो वरजब पुर्णभरले॥ अक्षोभ समुद्दासि तुलले॥ एउ साजब बगहो सिजान बले॥ सगु उस
बलि बरी॥ ८३॥ रवब कबले ने न पोडो॥ उद्दकू किने कु गे लेआकाशे॥ मुखप सरो मियेकुः सरि से
हणु मंतु धरिभावरणी॥ ८४॥ आणार बै सलि वज्र मिरी कैसि॥ अजगरेता बासि भातली आटो॥

Digitized by srujanika@gmail.com

५
ऐसे देखो निक पिले गी। क्षेत्रे करि ना जाला। व्यतीम करे कुंगी पूरि ली। के दुन बाहिर काठिली।
जैसे कुंज रे कम क्षणी तो उड़ी। ऐसे निप्रवासे पै। व्याति चै पर्व नासा दिरे ये शरि। वज्जाए से जा।
गक्कटे रांह ए मंने दिधलि पाप। निगुनि वर्मागी। ७। पद्म पव्वा ए सिन्दूर्ण जाली। मेर मां से जगधे
पृथ्वी धाली। तव नियादे हापासो नियाली। दि क्षय रे बांग पा॥ ८॥ उमिराहो निकधां ऊँकी।
ह पुमं तु स्तविलाने कावी। मग क्षपे गम ह। ९। महाक्षवी। खागो ने ससमानी। व्याहन केजा।
साधु उत्तराश्वरु। कृष्ण विश्वेसमा न करु। ह जविस्तु करु। वे हनि धोरु। कृष्ण निरोहित गज से॥ १०॥ रुजा
अमुदि से मनो हडु। लाटी काउ। ११। वरुन उग। निरु। गवे माया वो उंचन। दिसे तितु ब्रेमिथा॥ ११॥ या
सि विश्वासो न को जाता। यावावधु कृति बृ
लु सो निप्रसादे ये कावी। १२। सीजालिय श्रावन। जाता ज्ञासा दूर महाबकी। जाइन मिनी जला
का सि॥ १३॥ निवि परि सो नि नवने ज्ञाच्छिर्य मुरलवामो नंदने। अणे तुको पोपो वेसने। उ
नि कावये धेहो तिस॥ १४॥ ठेसे हणु मंता ये जाक्षे पि। बोले जपसर पुनरपि। अणे परिसउ त्रो
रियाकूपी। उर्वविवंवनो गलि॥ १५॥ मासे निस्वसु पयो वने। देवापि सेवे लेमदने। पमज देवो नि
यावदने। पवित्रि अष्टनायका॥ १६॥ मासे भृत्ये वव्वपाख्यै। उपउ निसहान पीया आमुरुकुडी।

Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com

४८
विरंनिजादिकसनिसांउ। नासनासजवरि॥१७॥ प्याबा पुलोयेन सुमंदरपने। ऐलोक्य देले रेगने॥ येहोग
विनपोधनाकारने॥ उमनास्तवठकलिले॥१८॥ नोसाक्षांत इश्वरन पाक्षी॥ आउरिधनात काक्षी॥ महोड
सनेमहोडोरजक्षी॥ मृस्त्वोक्तिवहुकाक्ष॥१९॥ मगमिजालियेन याचकिन॥ केलानमस्कार रेतवत॥ प्रार्थना
कलिबहुत॥ मगउआपमागि नला॥२०॥ मगसात्पाक्षे॥ मजप्रतिबोलिलेकरवे॥ आपवेगवीस्वभाव
हासिलेनेसमई॥२१॥ हणुमंत्रुमासजवनारि॥ महदत्तसाजानुसासगेवरि॥ उद्भवयैर्लनिर्धारि॥ येसगेव
रिप्रवेशलिया॥२२॥ येथेष्वसतां बहुनकाळ॥ अपि भसित ज्यायेवहुक्षब्रपापतुपमासेत्तारि॥ कैवव्य
हातेहाकाक्षवरि॥ अहेस्तियाजवध्युपुणजालेवक॥ ज्ञासहयवन्नजाभरली॥ जाजिधन्यदिवसदेरिलि॥
लि�॥ पाउलिनुस्तिओवा॥२३॥ ऐसासांगेबप्सगरे॥ दरवेत्तिजास्त्विक्तरि॥ हणुमंत्रु॥ पुढेसव्यघनुला
वायेसुतु॥ उध्वमर्गेनियाली॥ धाजेस्तिविद्वहुतरि॥ गोलिगली॥ लैसितेजप्रयस्तजालीप्तेसेदर्ये
निचुड़ीयोजीक्षी॥ काक्षनेमिनेक्षेसी॥ खामहाचोरक्षरक्तुंच॥ ज्ञारिरधरिलेयोजनेपाच॥ लवहा
क्षाकेल्लातेनेसंकोच॥ सिहंशाधुवजालो॥ गोसहणुमंतेदेसिलो॥ हन्तेजपसरायथार्थक्षिले॥ आ
जायासिवधुम्लणउनिधरिले॥ ज्ञारिरशनयोजने॥२५॥ मगहणुमंतेचरणानक्षी॥ भास्तेसुरैस्तिल
क्षी॥ प्रश्विवरि॥ पुत्रातेकट्टी॥ ज्ञारिरशन चुर्णजाले॥ धृतातिलापातिलास्त्राध्वनीपतोगंधवी
आइक्षिल्लाक्षनी॥ मगनेजालेक्षोधेक्षणि॥ जेथेमावक्षहोताख॥ क्षोधेधावोनितेथेजाले॥ हणुमंता



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com